Vol 4 Issue 10 July 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.140(UIF)
Volume - 4 | Issue - 10 | July - 2015

औपन्यासिक सृष्टि में विरचित पूंजीवाद, साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद की त्रिवेणी का कड़वा सचः बाज़ारवाद।

किरण ग्रोवर

सारांश

भारत के इतिहास की प्रमुख घटना है,उपनिवेशवाद। उपनिवेशवाद बहुधा साम्राज्यवाद एवम् दूरस्थ क्षेत्रों में उपनिवेश कायम करने का परिणाम है। भूमण्डलीकरण पूंजीवादी व्यवस्था का अत्यन्त आधुनिक व विस्तृत रूप है। इस व्यवस्था की नीतियां सिर्फ आर्थिक क्षेत्र में सामित नहीं है अपितु सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र पर भी अपना प्रभाव डाल रही है। भूमण्डलीकरण प्रक्रिया का अनिवार्य व अभिन्न हिस्सा हैः मुक्त व्यापार व्यवस्था। बाज़ारवाद के मूल में पूंजीवादी, साम्राज्यवादियों, उपनिवेशवादियों की संगठित साज़िश है यानी बाज़ारवाद पूंजीवाद का ही फलितार्थ है। साहित्यकार का धर्म जीवन के विविध पक्षों के यथार्थ को मानवीयता के धरातल पर आंकना है। आज भारत के सामने राष्ट्रीय संस्कृति का संकट मंडरा रहा है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भूमण्डलीकरण की संस्कृति भारत की राष्ट्रीय संस्कृति पर कुठाराघात कर रही है। वैश्वीकरण, औद्योगीकरण व उदारीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति को जन्म दिया। इस स्थिति को देखकर आभास होता है कि पूंजीवाद, साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद की त्रिवेणी ने हमें जाल में फंसा दिया है। साहित्यकार भविष्य का द्रष्टा होता है और यह भविष्य कल का यथार्थ है। साहित्यकारों यथा कमलेश्वर, काशी नाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, अलका सरावगी, रवीन्द्र वर्मा, नासिरा शर्मा,ममता कालिया, स्वयं प्रकाश, प्रियंवद ने अपनी औपन्यासिक सृष्टि के माध्यम से विवेचित किया है कि हमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बाज़ारी आंखों को पहचानने की आवश्यकता है। साहित्यकार बाज़ारवाद की माया मोहिनी से बचते हुए लेखन का दायित्व निभाते हुए जनता को तैयार करने की चुनौती से लैस होकर सृजनशीलता का धर्म निभा रहे हैं, उनके प्रतिरोध को व्यर्थ नहीं समझना चाहिए।

बीज शब्दः—बाज़ारवाद, पूंजीवाद,उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, त्रिवेणी।

SHORT PROFILE

Kiran Grover is working as an Associate Professor at P. G. Department of Hindi in D A V College, Abohar.

प्रस्तावना :

मूल प्रतिपादनः— उप निवेशवाद सत्रहवीं शता-ब्दी के अन्तिम दशकों में उपजी एक वाणिज्य केन्द्रित प्रवृत्ति है। उपनिवेशवाद पूंजीवादी राष्ट्रों द्वारा कमज़ोर देशों पर वर्चस्व कायम कर उनके आर्थिक संसाधनों के लूट में परिणित एक प्रक्रिया है। आलोचक लेनिन का तर्क है कि बीसवीं सदी के पूवार्द्ध में पश्चिमी देशों में उपस्थित औद्योगिक क्रान्ति एवम् वित्तीय पूंजी के विकास ने पूंजी संचय की स्थिति कायम की। इस पूंजी का विस्तार ही मौलिक स्तर पर उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद को जोड़ने वाली कड़ी है। आलोचक जयप्रकाश का कहना है कि बीसवीं सदी के आरम्भ मेंलेनिन ने औपनिवेशिक दौर के साम्राज्यवाद की विशेषताओं का गम्भीर अध्ययन किया तथा उन्होंने पूंजी के निर्यात को उसकी प्रमुख विशेषता बताया था। आलोचक अवधेश कुमार का कहना है कि किसी दूरस्थ क्षेत्र पर शासन कर रहे किसी प्रबल महानगरीय केन्द्र के सिद्धान्त,व्यवहार और दृष्टिकोण का नाम साम्राज्यवाद है। उपनि–वेश बहुधा साम्राज्यवाद एवम् दूरस्थ क्षेत्रों में उपनिवेश कायम करने का परिणाम है। उपनिवेशवाद का अर्थ है कि किसी राज्य की भौतिक सम्पति का विनियोजन, वहाँ के श्रमिक का शोषण, राजनीतिक संरचना पर घुसपैठ आदि। साम्रा–ज्यवाद एक वैश्विक व्यवस्था है जहां साम्राज्य का केन्द्रक हीउपनिवेशित देशों पर शासन करता है। उतर औपनिवेशिकता का एक आयाम औपनिवेशिकता के पश्चात् उपनिवेशित देशोंकी कला,संस्कृति, भाषा,साहित्य आदि के स्तर पर हुए सशक्ति करण का है दूसरा आयाम बाज़ारीकरण और उदारीकरण से उत्पन्न विश्वग्राम की संकल्पना का है।[1]

भारत के इतिहास की प्रमुख घटना है, उपनिवेशवाद। ब्रिटिश हमारे भारत को अपने बल पर उपनिवेश बना कर रखता था तब से यह पिछड़ेपन के दवाब का कारण बन गया। बाद में उपनिवेशवादी संस्कृति हमारे समाज में फैलने लगी।यह

एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।

आधुनिकता से पूर्व का संक्रमण काल था।बाद में उसका आधुनिक रूप हमारे समाज में देखने को मिलता है। आज वही नवउपनिवेशवाद के नाम से जाना जाता है।बाज़ार भौगोलिक सीमाओं के बन्धन को नहीं मानता। वह हमें चुनाव की सुविधा प्रदान करता है। दुनिया की सभी संस्कृतियां,भाषाएं आपसी मिलावटसे उत्पन्न हुई हैं लेकिन बाज़ार की अपनी एक संस्कृति होती है। वह अपने उत्पाद बेचने के लिए सभी प्रतिरोध तोड़ता है।प्रतिरोधहीन व्यक्ति ही बाज़ार का उपभोक्ता है।बाज़ार को उपभोक्ता ही चाहिए जो अपना कोई विचार या प्रतिरोध दर्ज़ न करा सके।उपभोक्ताओं की मानसिकता,जरूरतें अपने अनुकूल बनाने के लिए आवश्यक है कि बाज़ार के अनुरूप एक सरकार हो क्योंकि बाज़ारसरकारों, दफतरों व नेताओं को भी खरीदता है।[2]बाज़ार सिर्फ खरीदने बेचने की जगह न होकर संस्कृति,साम्राज्य, राष्ट्र बनाने की व्यवस्था भी है जो व्यक्ति को मात्र उपभोक्ता में बदल कर रख देती है।बाज़ार की एक पूरी राजनीतिक,आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था है।बाज़ार भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण के माध्यम से दुनिया भर में स्वयं को संगठित कर रहा है।

भूमण्डलीकरण व आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया पिछले दो तीन दशकों से दुनिया के तमाम विकासशील देशों में अलग अलग पैमानों पर कार्यान्वित हो रही है।भूमण्डलीकरण पूंजीवादी व्यवस्था का अत्यन्त आधुनिक व विस्तृत रूप है।इस व्यवस्था की नीतियां सिर्फ आर्थिक क्षेत्र में सामित नहीं है अपितु सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र पर भी अपना प्रभाव डाल रही है।दरअसल यह व्यवस्था विकसित देशों के नेतृत्व में विकासशील देशों को लूटने का कारगर ज़रिया है।[3]ये देशआर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया को लागू करने के लिए गरीब देशों पर दबाव डाल रहे हैं।उदारीकरण के इन कार्यक्रमों के अन्तर्गतसीमा शुल्कों को घटाने,आर्थिक विकास के लिए दी जाने वालर कटौतियां,सरकारी क्षेत्र के संस्थानों को निजी क्षेत्र के मालिकों के नाम स्थानान्तरित करने के व्यापक प्रावधान हैं।विश्व बैंक,अन्तर्राष्ट्रीयमुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन साम्राज्यवादी देशों के हिकमतों के सांझेदार हैं ,इनकी नीतियां व शर्तें गरीब देशों पर पाबन्दी लगाती हैं मसलन जब भारत ने पोखरन में अणुविस्फोट किया था तब अमेरिका ने आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिया था। विश्व का व्यापारीकरण एक हद तक दुनिया की विपन्न व विकासशील जनसंख्या को बहुराष्ट्रीय व्यापारिक शक्तियों का मोहताज़ बनाता जा रहा है। आम जनता भूमण्डलीकरण का शिकार बनती जा रही है, भूमण्डलीकरण का प्रभाव सबसे अधिक गांवों पर पड़ रहा है। गांव की जनता अनपढ़ है,उन लोगों का शोषण करना आसान कार्य है। लोग स्वार्थता के नाम पर कुछ भी करने के लिए तैयार है, उसकी परिणति के बारे में लोग सोचते ही नहीं। कोका कोला कम्पनी की स्थापना के बाद गांव के कुओं में पानी का किल्लत सहन करनी पड़ रही है।कोका कोला में निहित रसांश कोडैल्यूट करने के लिए बीस गिलास पानी की आवश्यकता होती है। भारत जैसे गरीब देश में कोका कोला पीने के बाद की बीमारी का इलाज करने के लिए हाइटैक सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। भूमण्डलीकरण प्रक्रिया का अनिवार्य व अभिन्न हिस्सा हैः मुक्त व्यापार व्यवस्था।4मुक्त व्यापार व्यवस्था में मांग के अनुसार उत्पादों का पुराना बाज़ार तंत्र बुनियादी तौर पर बदल गया है।

अब निर्माता विज्ञापन के सभी नवीन माध्यमों के ज़रिएसमाज में ऐसी मानसिकता पैदा कर देते हैं कि लोग ज़रूरी चीज़ें मांगने की बजाय ऐसी चीज़ें खरीदने के लिए मज़बूर हो जाते हैं और जिन्हें हासिल करने पर खरीदार को लगता है कि उसकी शान शौकत बढ़ गई है।अब हैसियत,शान, शौकत व रौब का आधार कीमती चीज़ें हैं,यही छोटे बड़े की भिन्नता का कारण बन जाती हैं।बाज़ारीकरण का ज्ञान लोगों को नहीं इसलिए विकसित देशों का अनेक स्तर पर हमें शिकार बनना पड़ता है।[5]यदि हममें मानवीय मूल्य हैं तब विकसित देश व्यापार की आंख लेकर हमारे नज़दीक नहीं पहुंच पायेंगे।आज विदेशों के द्वारा जो मित्रता का हाथ बढ़ाया जा रहा है,उनके भारत आगमन के पीछे गूढ़ लक्ष्य बाज़ारी आंख का ही है। पुराने ज़माने में ब्रिटिशों का लक्ष्य भारत पर आक्रमण करके उन्हें अपने अधीन करना था,आज उसका हम विकसित रूप देख रहे हैं। आज हमारा घर चीज़ों से भर गया है, आदमी का मूल्य घट गया है।एक दिन घर चीज़ों से भर जायेगा उस दिन चीजें चीज़ों से मिल जायेंगीी तब आदमी नदारद हो जायेगा।भारत सरकार को मानव की अवनति का दिग्दर्शन पहले ही हो गया था,इसलिए 1994 में गाट समझौते में हस्ताक्षर लगाने के लिए एक दशक पहले ही शिक्षा एवम् संस्कृति के मंत्रालय का नाम बदल कर मानव संसाधन मंत्रालय कर दिया गया था। नाम का परिवर्तन निरीह घटना प्रतीत होती है। बाज़ारवाद के मूल में पूंजीवादी, साम्राज्यवादियों, उपनिवेशवादियों की संगठित साज़िश है यानी बाज़ारवाद पूंजीवाद का ही फलितार्थ है।[6]

समाज पर जब कोई खतरा आन पड़ता है तो साहित्यकार उसे बहुत जल्दी पहचान लेता है। उसका मन यह सोच कर व्याकुल हो उठता है तो उसके मन का संघर्ष उसे कई पहलुओं पर सोचने विचारने के लिए मजबूर करता है जिससे नये नये विचारों कर सृष्टि होती

है।उन विचारों के जरियेसाहित्यकार सामाजिक परिवर्तन की मांग करते हैं। मनुष्य को विवेकशील बनाकर क्रान्ति का आह्वान उसका मुख्य ध्येय बन जाता है।रचनाकारों के इसी प्रयास को मैनेजर पाण्डेय जी के शब्दों को प्रकट किया जा सकता है–'किसी रचनाकार की चिन्ता का विषय जीवन का यथार्थ है औरजीवन का यह यथार्थ बहुयायामी होता है। रचनाकार सामाजिक यथार्थ और सामाजिक सम्बन्धों की समग्रता का चित्रण करते समय मानव सम्बन्ध के वैयक्तिक,सामाजिक और मानवीय पक्षों का उद्घाटन करता है।'[7] रचनाकार का धर्म जीवन के विविध पक्षों के यथार्थ को मानवीयता के धरातल पर आंकना है। आज भारत के सामने राष्ट्रीय संस्कृति का संकट मंडरा रहा है।सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भूमण्डलीकरण की संस्कृति भारत की राष्ट्रीय संस्कृति पर कुठाराघात कर रही है।साहित्यकारों की प्रतिक्रिया और सच्चे साहित्य पर निरंजन सहाय जी ने लिखा है कि 'असल में सच्चे साहित्य के उद्देश्य का प्रस्थान बिन्दु होता है–सहमति का विवेक और असहमति का साहस। समाज की शोषण व्यवस्था के विरुद्ध सदैव सार्थक साहित्य हस्तक्षेप करता है।' वास्तव में सच्चा साहित्य सदैव समाज के अन्याय पर अनली असहमति जाहिर करता है और उसका तीव्रता से विरोध भी। साहित्य को जीवनोपयोगी सिद्ध करते हुए प्रफुल्ल कोलख्यान लिखते हैं कि'साहित्य का सत्य सत्यान्वेषियों का सत्य न होकर भी उनके सत्य से अधिक जीवनोपयोगी, प्रामाणिक व मानवीय होता है।'प्रफुल्ल जी ने यथार्थ को मानवीयता के आवरण में ढंककर जीवन के लिए उपयोगी मुद्दों को उभारा है।8भीष्म साहनी जी ने सृजन को साहित्यकार की अन्तःप्रेरणा और विचारों का स्पन्दित रूप माना है।9रामशरण जोशी जी ने साहित्य और समाज के रिश्ते को व्यक्त करते हुए साहित्य को मानवीयता के लिए आवश्यक माना है।[10]साहित्यकार अपने दायित्व के प्रति वाकिफ़ हैं, वे इस चुनौती को निभा रहे हैं।साहित्यकार भविष्य का द्रष्टा होता है और यह भविष्य कल का यथार्थ है।साहित्यकार बाज़ारवाद की माया मोहिनी से बचते हुए लेखन का दायित्व निभाते हुए जनता को तैयार करने की चुनौती से लैस होकर सृजनशीलता का धर्म निभा रहे हैं, उनके प्रतिरोध को व्यर्थ नहीं समझना चाहिए।

यह कहना समीचीन होगा कि आजकल भूमण्डलीकरण के नाम पर पूंजीवादी साम्राज्यवादी ताकतें जड़ें जमा रही हैं। ब्रिटिशों के शासन के बाद हमारी संस्कृति विकृत हो गई। आज दुनिया के अनेक देशऋण की जंज़ीरों में जकड़े हुए बुरी सांस ले रहे हैं। बहुसंख्यक लोगों को भिखमंगें बनाने वाली पूंजीवादी संस्कृति पर वार करते हुए कबीर के जरिए माउण्टबैटन को कहलवाया है–'हम भीखमंगों की नस्ल को तुम लुटेरों ने पैदा किया है। हम जैसे भिखारियों की नस्ल तुम्हारे इंडस्टियल रेवल्यूशन से पहले दुनिया के किसी देश में मौजूद नहीं थी। अमीर और गरीब पहले भी थे।भिखारियों का जन्म उपनिवेशी बन्दोबस्त के साथ हुआ––तुम उपनिवेश वादियों ने हमारी दुआएं भी दोगली बना दी।'[11] ब्रिटिश शासन के समय हमारी अखंडता पर प्रश्न चिह्न लगाया गया। वैश्वीकरण, औद्योगीकरण व उदारीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति को जन्म दिया।वस्तुतःबाज़ार व साम्राज्य का सम्बन्ध अटूट होता है क्योंकि बाज़ार साम्राज्य के लिएहोता है और साम्राज्य बाज़ार के लिए। जब औद्योगिकक्रान्ति होती है तो पूंजीवाद बढ़ता है और फिर साम्राज्यवाद। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में इस स्थिति का परिदृश्य अदीब के कथन के माध्यम से प्रस्तुत किया है :–''बाज़ारों के लिए बनते हैं साम्राज्य और साम्राज्यों को जीवित रखने के लिए बनाये जाते हैं बाज़ार।साम्राज्यों की नाभि बाज़ार से जुड़ी है।साम्राज्यों के रूप बदल सकते है–– वे प्रजातांत्रिकआर्थिक साम्राज्य का रूप ले सकते है परन्तु इन पूंजीवादीप्रजातंत्रों को जीने के लिए मुनाफे के बाज़ारों की जरूरत है––बाज़ार!बाज़ार!! बाज़ार!!! यही हैऔद्योगिक क्रान्ति का सतत जीवित रहने की मजबूरी भरा सिद्धान्त ! यही हैपूंजीवाद ! इसी का दूसरा नाम है साम्राज्यवाद । तीसरा नाम है उपनिवेशवाद। और दस्तक देती हुई नई सदी में इसका नाम है बाज़ारवाद।''[12] अदीब के माध्यम से कमलेश्वर जी नेसाम्राज्यवाद,उपनिवेशवाद और बाज़ारवाद के सच को प्रकट किया है।

भूमण्डलीकरण के दौर में पूंजीवाद आर्थिक उदारीकरणके अन्तरंग सम्बन्धों की परिणति हैः बाज़ारवाद। बाज़ारवाद के चलते कलात्मक सृजन,दार्शनिक चिन्तन, वैज्ञानिक अनुसन्धान, ज्ञान व शिक्षा का प्रसार,समाज सुधार, राजनीतिक परिवर्तन आदि व्यापक मानवीय उद्देश्यों से किये जाने वाले कार्य भी सीमित व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति मानी जाती है। तकनीकी क्रान्ति की वजह से सामाजिक व्यवस्था बाज़ारवाद का ही समर्थन करती है।काशी नाथ सिंह जी का 'काशी का अस्सी' उपन्यास बनारस का शोक गीत है। बनारस में बाज़ारवाद का चेहरा बहुत पहले से ही मौजूद है जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति काशी नाथ जी ने की है –'आप लंका से हर शाम आते हो,भांग खाते हो,चाय पीते हो, गपाष्टक करते हो और लौट जाते हो व मगन रहते हो कि वाह रे हम! लिंग पर गलोब उठाकर तान दिया हमने और दुनिया देखती रह गई।कभी जानने की कोशिश की कि क्या हो रहा है यहां––––फर्जी

शादियां की वीज़ा के एक्सटेंशन के लिए। बीसों साइबर कैफे खुलवाए।इसे ही समझते है—ग्लोबलाइज़ेशन। उन्हें जितनी बार आना जाना हो आएं जायें,जब तक रहना हो,तब तक रहें,लेकिन हम। हमारी हैसियत एक बार भी अमेरिका जाने की नहीं। हमारा घर उनका घर है——थोड़े दिन बाद ही ये बोलेंगे कि अस्सी जर्जर हो रहा है, मर रहा है हमें दे दो तो नया कर देंगे—एकदम चमाचम। कल बनारस को चमकाएंगे। परसों दिल्ली को ठीक करेंगे, नरसों पूरे देश को गोद ले लेंगे और झुलायेंगे,खिलायेंगे अपनी गोद में। यह बाद में पता चलेगा कि हम किसकी गोद में हैं—जसोदा मैया की कि पूतना की।'[13] इस प्रसंग में भविष्य के प्रति आशंका विद्यमान है क्योंकि जिस मिथक का हवाला लिया गया है उसी के कारण हमारा अस्तित्व खतरे में है।

आज मानव के बीच विभाजित संस्कृति विद्यमान है। बाज़ार की सारी चीज़ें एक एक को बंटी हुई हैं। यही समाज में उच्च नीच के भेदभाव का कारण बनता है।एक घर में दूसरे के घर की चीज़ें नहीं हैं लेकिन बाज़ार चीज़ों से भरा पड़ा है। बाज़ार एक सम्बन्ध है —पूंजीवादी सम्बन्ध। बाज़ार की शक्तियों ने साहित्य की भूमिका व स्वरूप को बदल दिया है।संस्कृति का बाज़ार के रूप में परिवर्तन होना पश्चिम में विचार विमर्श का विषय बन चुका है। औद्योगिक युग के चरम क्षणों में पश्चिमी व पूर्वी जगत ने सच मान लिया कि संस्कृति उद्योग के रूप में ही संभव है।संस्कृति का पण्य के रूप में पुनरुत्पादन संस्कृति को जन संस्कृति बनाता है।साहित्यिक क्षेत्र में बाज़ारवाद एक प्रभुत्वशाली विचारधारा है।काशी नाथ सिंह जी ने विवेच्य उपन्यास में बाज़ारवाद का प्रतिरूप इस प्रकार विवेचित किया है—' हलो! हाय !मेरी बेटियों ,जियो लाख बरस जियो। अगर पढ़ते पढ़ते उब गई हो स्टेनो, प्राइवेट सैक्रेटरी, रिसेप्शनिस्ट, प्रोबेशन अफ़सर नहीं बनना चाहती तो डाक्टर, इंजीनियर,ऐयर होस्टेस बनना हमारे वश में नहीं है तो निराश न हों शहनाज़ हुसैन से सम्पर्क करो ,अपने नगर मुहल्ले में ब्यूटी पार्लर खोलो। किसी ऐश्वर्या राय, सुषमिता सेन,लारा दता से कम नहीं हो तुम———किससे कम स्मार्ट और क्यूट हो। कोई कमी रह गई है तो उसे पूरा करने के लिए सामान भरे पड़े हैं बाज़ार में।बाज़ार से चीज़ें खरीद कर उसके बल से कृत्रिम सौन्दर्य को अपनाकर लोग विजय हासिल करते हैं।'[14] आज कल ज्यादा खर्च करके चीज़ों को खरीदना बाज़ार की संस्कृति बन चुका है।

घर के कमरों में बाज़ार का घुसना बाज़ार के साथ हमारे सम्बन्धों को प्रकट करता है। सरकार भी बाज़ार का एक ही मतलब जानती है कि बाज़ार वही है तुम्हारे दरवाज़े पर है। हमारी संस्कृति में बाज़ार की संस्कृति मिलने पर अपसंस्कृति का निर्माण हो रहा है।काशी नाथ सिंह जी ने बाज़ार की संस्कृति का परिदृश्य लिया है कि 'जब बीवियां झुंझलाए और मुर्दा चेहरों के साथ किचन में धुसती हैं।चाय तैयार करने के लिए अपनी किस्मत का रोना शुरु करती हैं।चाय और चूल्हा, बिस्तर और बच्चे —क्या ज़िन्दगी है अपनी भी? उनसे बाहर नज़र तो डालो——फास्ट फूड क्यों बिक रहे हैं?रेस्त्रां और होटल किसलिए हैं? किनके लिए हैं। किचन की मोनोटनी को तोड़ने के लिए है न। मंगा लो जो चाहो। कहीं जाने का भी झंझट नहीं।यह भी बताओ कि होंठ, दांत, नाक,आंख, माथा चमड़ी ,बाल इन सबके लिए एक नहीं बीस तरह की—बीस रंग की—बीस साइज़ की ?सस्ती से सस्ती,महंगी से महंगी चीज़ों से पाट दिया है—बाज़ार।'[15]

बाज़ारवाद ने लोगों का मनोवृत्ति को ऐसा बदल दिया है कि हर एक के लिए सबसे उदात्त और मूल्यवान बात बाज़ार केन्द्रित हो गई है। दूधनाथसिंह जी ने 'आखिरी कलाम' उपन्यास में आचार्य तत्सत पाण्डेय का पोता परम्परागत ढांचें को तोड़कर बाज़ार की ओर जाने लगा।उसका दादा आचार्य है,उसका पिता माधवानन्द भी अध्यापक है लेकिनउनका रास्ता न अपना लिया।तत्सत पाण्डेय के जीवित रहते ही उसका परिवार बाज़ार में बदल गया। उनके पोते रविकान्त ने पढ़ना छोड़ दुकान खोल ली। घर के भीतर समृद्ध पुस्तकालय है लेकिन छज्जे पर स्पेयर पार्टस्, मोबाइल और टायर।उसका विद्या व्यसनी परिवार एक आदमी के कारणबाज़ारू बन गया।[16]

आज़ादी मिलते ही जनता पचास वर्ष होते तक बाज़ार संस्कृति का शिकार बन गई। अलका सरावगी ने 'कलिकथा वाया बाइपास' उपन्यास के किशोर बाबू के बेटे ने उनको फोर्ड गाड़ी खरीद कर दे दी। जब किशोर बाबू ने अपने घर के अहाते में चमकती हुई हरे रंग की फोर्ड गाडी देखी तो उनका सिर घूम गया क्योंकि उन्होंने —'पिछले महीने अख़बार में पढ़ा था कि फोर्ड कम्पनी आज़ादी की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर झंडे के तीन रंगों की चार सौ गाड़ियां बेचेगी और दामों में भारी रियायत होगी।'17किशोर बाबू ने सोचा कि फोर्ड कम्पनी की गाड़ी बाज़ार में बिक नहीं रही है। एक ओर प्रसंग में विज्ञापन की विकृति का वर्णन है—' राष्ट्रीय ध्वज तथा वन्देमातरम् ने अख़बारों और दूरदर्शन के विज्ञापनों में बिककर स्वतंत्रता का करोड़ों रुपये का कारोबार बना दिया है।'[18] तत्कालीन संस्कृति मानव को इस प्रकार का कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।बाज़ार तंत्र की आंख सब कहीं है, यह मानव को ऋण की जंज़ीरों में डाल देता है।किशोर बाबू ने बेटे के पास कार खरीदने के लिए पैसे नहीं है,बेटा सौ प्रतिशत फाइनैन्स पर गाड़ी खरीदता

है,बस किस्तों में रकम चुका देता है।बाज़ार मानव को आकर्षित करने के लिए किसी भी कार्य को करने के लिए तैयार है।

रवीन्द्र वर्मा जी ने 'निन्यानवें' उपन्यास के अन्तर्गत मुखर्जी फार्मस्यूटिकल्स का अंग्रेजी कम्पनी बुल एण्ड बेल के सहयोग की बात चल रही थी।बुल एण्ड बेल का कोई भारत में कोई ठोस विपण्णन प्रबन्ध नहीं था।सहयोग का शुभारम्भबुल एण्ड बेल की दवाइयां का मुखर्जीफार्मस्यूटिकल्स द्वारा विक्रय से होता था। अतः दोनों कम्पनियों को भारत में एक हो जाना था और मिस्टर मुखर्जी को उस भारतीय कम्पनी को सर्वेसर्वा अध्यक्ष होना था। इस अभियान का आरम्भ बुन्देलखण्ड में बुल एण्ड बेल का मलेरिया की दोनों दवाइयों का इन गर्मियों में व्यापक विक्रय से होना निश्चित हुआ था।मिस्टर मुखर्जी का उद्देश्य अंग्रेज़ी दवाइयां बेचकर पैसे कमाने थे।अपनी स्वार्थता की पूर्ति के लिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। झांसी के लोग जिए या मरे उसको उससे कोई मतलब नहीं था।यहां मुखर्जी अमानवीयता के प्रतिनधि हैं। एक अन्य प्रसंग के अन्तर्गत बल्लो बाबा की साइकिल लेकर मानिक चौंक गया।मानिक चौंक में दोनों ओर जाते तांगें थे, साइकिलें थी,खुलते बाज़ार में लोग खिलौनों की तरह लग रहे थे।सूर्य बाज़ार में कहीं नज़र नहीं आ रहा था–'एक दिनबल्लो ने सपना देखा। सपने में एक किला था।पहले किले का रंग काला था बाद में गुलाबी हो गया था।बल्लो की समझ में यी नहीं आया कि क्यों किले का रंग गुलाब का रंग हो गया।उसने हरि से पूछा, हरि ने हंसकर कहा 'दादा जब कोई चीज़ बेचते हैं तो उसे धो –पोंछ देते हैं,चमका देते हैं,उस रंग रोगन करदेते हैं,ताकि दाम अच्छे मिलें।बल्लो चौंका और कहा क्या उस किले को बेचना चाहते हो।यह किला हमारी आत्मा है,यह शहर रानी लक्ष्मीबाई के किले के बिना नहीं जी सकता।यह किला यहां से चला जायेगा।हरि ने उतर दियाकि खरीदने वालों की मर्जी के अनुसार यह तय होगा।हरि ने कहा –यह दाम नहीं दे पायेंगें। बल्लों ने कहा तो किला नही बेचोगे न।हरि मुस्कुराया,नहीं दादा अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में सौदा पट जायेगा।पश्चिम के कुछ दौलतिए इस व्यवसाय में माहिर हैं।उनके पास अकूत पैसा और अनहोनी बुद्धि। वे नेपोलियन की कमीज़ और हिटलर की पैंट लाखों में खरीदकर करोड़ों में बेच सकते हैं।वे सौदे को पकाना चाहते हैं जैसे किला स्कोच हिव्स्की की बोतल हो।'19इससे स्पष्ट है कि आज लोग बाज़ार तंत्र से परिचित होकर लाभ मिलने के लिए निन्दनीय कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस प्रसंग में किले को तोड़ मरोड़ कर लाभ मिलने को साधन के रूप में परिवर्तित किया जाता है इसलिए यहां धोखे का स्वर सुनाई पड़ता है।

नासिरा शर्मा जी ने 'ज़िन्दा मुहावरे' का निज़ामका उल्लेख किया है जो भारत पाक विभाजन के बाद भारत छोड़ कर पाकिस्तान चला गया। पहले वह भूख से पीड़ित होकर मज़दूरी करने लगे।बाद में कपड़ों की दूकानों का मालिक बन गया।परिवार के लोगों से बात करने के लिए उसके पास समय नहीं। बिज़िनस के तहत अमेरिका जाना था। अमेरिका से आते वक्त वह उसके मित्रों से फ़ोन पर बिज़िनस के बारे में बाते करते रहते हैं।पत्नी सबीहा को परिवार की परेशानियों और खुशियों के बारे में कहने का अवसर ही नहीं देता।तब सबीहा के विचार को देखिए–'अब निज़ाम अकेला उसका और उसके बच्चों का नहीं रह गया है,बल्कि बाज़ार ग्राहक के बीच क्रस विक्रय में फंसा सामान तौलता,पैसे गिनता बहुत बड़ा धन्ना सेठबन गया।'20इससे स्पष्ट होता है कि बाज़ार के पीछे भागने वाले निज़ाम जैसे लोग परिवार से अलग होकर पैसे के लालच में उन्हें त्रस्त करते रहते हैं। स्वभावतः इस तरह के लोग सांस्कृतिक मूल्यों से दूर रहकर पारिवारिक टूटन की एक कड़ी के रूप मे रह जाते हैं।हमारी सामाजिक व्यवस्था भी एक हद तक कारण बन जाती है।बाज़ार आजकल मानव को जीने के लिए मूल्यों के अतिरिक्त सिर्फ़ साधन ही साधन देता रहा है।

भूमण्डलीकरण ने आयात निर्यात की नयी छूट के साथ भारत के कायदे कानून भी बदल दिये हैं।सब देश भूमण्डलीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं। रवीन्द्र वर्मा जी ने 'दस बरस का भंवर'उपन्यास के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का देश के हर क्षेत्र में प्रवेश आसान हो गया है और सरकार भी उनके मुताबिक ही कार्यरत हो रही है–'नयी आयात नीति,उद्योग नीति बनायी,एम आर टी पी हटाया ,फेरा को ढीला किया,फिर विदेशी निवेश के एक एक करके सारे क्षेत्र खोल दिये,उने लिए आटोमैटिक रूट बना दिया,काउण्टर गारण्टियां परोस दी,अपने कानून तक बदल दिये।'[21]

स्वयं प्रकाश जी ने 'ईंधन' उपन्यास के अन्तर्गत इस प्रसंग को विस्तार देने का प्रयास किया कि आयात की भारी छूट से अर्थ की पकड़ भी विदेशी कम्पनियों के हाथ में समाहित हो गई है–'विद्युत उत्पादन और वितरण,रक्षा सामग्री उत्पादन,चिकित्सा उपकरण और जेल शोधनउत्पादन के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों घुस आयीं। अब सरकार उन्हें खुद दावत दे रही थी आइये ,हमारे सस्ते श्रम,प्रचुर खनिज, अनुकूल जलवायु,भारी रियायतों और विशाल मध्यवर्गीय बाज़ार का लाभ उठाइये।'आयात को देखते हुए स्वयं प्रकाश जी उस पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि 'उसी तरह पैप्सी आ

गयी,कोला आ गया, ——आले की चिप्स आ गयी,मक्का का दलिया आ गया———एक बार तो ख़बर आई कि गोबर भी आयात किया जा रहा है।'इसी उपन्यास में भारतीय कम्पनियों के विलय करने या अधिग्रहण करने की बात को व्यक्त किया गया है—कोका कोला पारले को पी गई और ब्रुक ब्राण्ड लिप्टन किसान,कोठारी और कवालिटी को खा गया,जिलेट ने मल्होत्रा और विलटेक की हजामत बना दी और व्हलपूल ने केलवीनेटरको घुमा दिया।एस्सार शिपिंग ने साउथ इण्डिया शिपिंग को डूबो दिया तो प्रोक्टर एण्ड गेम्बल ने गोदरेज को धो दिया।'[22]इस तरह भारतीय कम्पनियों पर कब्ज़ा हो रहा है। स्थिति इतनी भयावह है कि भूमण्डलीकरण के बाज़ार में बड़ी से बड़ी हस्ती भी नहीं टिक पाती। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लालची जीभ में भारत की बड़ी बड़ी निजी कम्पनियां तक फंसती जा रही हैं। ऐसे माहौल में लघु, कुटीर उद्योगों एवम् जनसाधारण का खेती की बात क्या हो सकती है।

हमारे देश में एक ओर सम्पति लूटने का खुली छूट बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को दी जा रही है तथा दूसरी ओर हमारे देश में बड़ी मात्रा में उपलब्ध सामग्रियां भी विदेश से आयातित होकर हमारे बाज़ारों को भर दिया जाता है। इससेदेश का आत्मनिर्भरता और अर्थव्यवस्था डगमगाने लगती है।कम्पनी वालों का पूरे देश को नियन्त्रित करना औपनिवेशिकता को दर्शाता है।ममता कालिया जी ने 'दौड़' उपन्यास के अन्तर्गत इस स्थिति को स्पष्ट किया है कि'इस दुनिया में एक चार पहिया दौड़ है,जिसके स्टियिरंग आपके हाथ में है पर बाकी सारे कंटोल्स कम्पनी के हाथ में। वही तय करती है कि आपको किस रफ़्तार से दौड़ना है और कब तक।'[23]

बहुराष्ट्रीय कम्पनियां धन बल को सबसे बड़ी ताकत मानकर में पूरी दुनिया को अपनी इच्छा अनुसार नियन्त्रण में रखने की इच्छुक हैं।प्रियंवद के 'परछाई नाच' उपन्यास के अन्तर्गत औपनिवेशिक तानाशाही का स्वर मुखरित हुआ है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बढ़ती ताकत और आम आदमी के डर को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में बौना बहुराष्ट्रीय कम्पनी का एजेण्ट है उसी के शब्दों में —'हम सर्वश्रेष्ठ हैं। हम अनन्त शक्तियों के मालिक हैं।एक दिन ब्राह्माण्ड में सब कुछ मारा होगा। हमारे तीन डगोंमें यह अन्तरिक्ष,यह धरती,यह पाताल होगा।हम संख्या में बहुत नहीं हैं,पर पृथ्वी में फैले इन करोड़ों लोगों को हम मुट्ठी में रखेंगे।'[24]

आज भारत विदेशी कम्पनियों से करोड़ों का ऋण ले चुका है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह भारी बन पड़ा है। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के अन्तर्गत भारत की इस अवस्था की तुलना भिखारी से की है—'मुझे खुशी है कि अब मेरे जैसा एक मजलूम आदमी ही भिखमंगा नहीं है,बल्कि अब अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, कम्बोडिया, इंडोनेशिया जैसे पचासों मुल्क भी हमारी जमात में मिल चुके हैं——हमारी अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक से भीख मांगते हैं।'25कबीर का यह वक्तव्य भारत की अवस्था पर करारा व्यंग्य है।भारत की स्थिति उन्नति के स्थान पर भूमण्डलीकरण के कारण अवनति की ओर बढ़ रही है।उपनिवेशवाद धन बल को प्रदर्शित करता है,इसका शिकार होने वाली जनता भी इस की व्यवस्था का विरोध नहीं कर पाती क्योंकि वह जनता को खंडित करने में सफल दिखाई देता है। एक ओर जनता भूमण्डलीकरण से पस्त है तथा दूसरी ओर युवा पीढ़ी और मध्य वर्ग को भूमण्डलीकरण की ओर आकर्षित करने की साज़िश विद्यमान है। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के अन्तर्गत लिख है कि 'नियन्त्रण द्वारा आत्माओं को तोड़ा जा रहा है।——फिर उन्हें विभाजित किया जाता है——उनमें सांस्कृतिक प्रतिरोध की शक्ति विखंडित की जाती है और तब बाज़ारवादी जोंके उस विभाजित कौम का सारा रस चूस लेती हैं।खंडित संस्कृति के श्मशानों में तब उत्सव के बाज़ार स्थापित होते हैं।'26इससे प्रतिध्वनित होता है कि जनता एक जुट होकर भी संघर्ष करने मे नाकामयाब बन रही है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगमन व उनके शोषण से आम आदमी को मौत का वरण करना पड़ता है।भूमण्डलीकरण का लक्ष्य अमेरिका का भारत के हर क्षेत्र पर कब्ज़ा करना प्रतीत होता है। भारतीय व्यवसाय का खातमा करके अमेरिका अपनी शक्ति वर्द्धित कर रहा है। रवीन्द्र वर्मा जी ने 'दस बरस का भंवर'के अन्तर्गत इस अवस्थिति को व्यक्त किया है—'फिल्मों से लेकर उद्योग तक था,जो दिन—ब—दिन निजी हाथों में खिसक रहा था।यह जरूर था कि छोटे उद्योग खत्म हो रहे थे जैसे छोटी छोटी मछलियां निगल रही हों, शहर की हवा बदल रही थी।'[27]

भूमण्डलीकरण वास्तव में साम्राज्यवाद का नया तंत्र है, इसी कारण समकालीन उपन्यासों में इसके खिलाफ़ विचार व्यक्त हुए हैं।रवीन्द्र वर्मा जी ने 'मैं झांसी नहीं दूंगा'उपन्यास में आर्थिक आधिपत्य के साथ संस्कृति पर भी संकट की संभावना पर विचार विमर्श किया है—'इसी भूमण्डलीकरण का दूसरा नाम साम्राज्यवाद है जिसे गोरे 'गोरे का कर्तव्य'—व्हाइट मैन्स बर्डन'भी कहते हैं।वे हमें गुलाम बनाकर हम पर एहसान कर रहे हैं—हमें नई तकनीक और संस्कृति दे रहे हैं।'28इस प्रकार आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र पर अतिक्रमण हो रहा हैं।अब यह राजनीतिक उपनिवेश भी प्रदान कर रहा है।यह उपनिवेश अप्रत्यक्ष होने के कारण

जनता समझ नहीं पा रही है।

समकालीन उपन्यासों के चिन्तन से स्पष्ट होता है कि बाज़ार की चकाचौंध से उपभोक्तावादी मानसिकता पनप रही है जो मानव को स्वार्थ केन्द्रित कर रही है। फलस्वरूप मानवीय रिश्तों में दरार और मूल्यों में बदलाव रेखांकित हो रहा है। इस स्थिति को देखकर आभास होता है कि पूंजीवाद, साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद की त्रिवेणी ने हमें जाल में फंसा दिया है,भविष्य में बाज़ार तंत्र से मुक्ति संभव नहीं क्योंकि हमारे देश में नव उपनिवेशवादी शक्तियां पनप रही हैं इससे राष्ठीय जागरण भी संभव नहीं हो पाता। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपनी चीज़ों को बेचने के लिए सभी देशों पर वशीकरण का मंत्र फैंक रही हैं।साहित्यकारों यथा कमलेश्वर, काशी नाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, अलका सरावगी, रवीन्द्र वर्मा, नासिरा शर्मा,ममता कालिया, स्वयं प्रकाश, प्रियंवद ने अपनी औपन्यासिक सृष्टि के माध्यम से विवेचित किया है कि हमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बाज़ारी आंखों को पहचानने की आवश्यकता है,नहीं तो हम अतीत के समान उपनिवेशवादी राष्ट्रों के हाथों की कठपुतली बन जायेंगे,जनता को आगाह करना इस पत्र का अभिप्रेत है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1 दिनेश भट्ट, नई सदी : बाज़ार,समाज, नवचेतन प्रकाशन,नई दिल्ली, 2005,पृ 125।
2 सच्चिदानन्द सिन्हा, भूमण्डलीकरण की चुनौतियां, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2003,पृ 112।
3 प्रभा खेतान, बाज़ार के बीच बाज़ार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004,पृ 132।
4 राम शरण जोशी, मीडिया और बाज़ारवाद, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 2004,पृ 130।
5 पुरुषोतम अग्रवाल, संस्कृति :वर्चस्व और प्रतिरोध,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004,पृ 135।
6 सुधीश पचौरी,मीडिया और साहित्य,राजसूर्य प्रकाशन,दिल्ली,2000,पृ 167।।
7 मैनेजर पाण्डेय, शब्द बौर कर्म, पृ 38।
8 प्रफुल्ल कोलख्यान,साहित्य समाज और जनतंत्र,आनन्द प्रकाशन, कोलकाता,2003,पृ 142।
9 भीष्म साहनी ,आज के अतीत,पृ 267।
10 राम शरण जोशी, मीडिया ,मिथ और समाज, पृ 142।
11 कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ 283।
12 वही ,पृ 204।
13 काशी नाथ सिंह,काशी का अस्सी, पृ 144।
14 वही पृ,136।
15वही पृ,197।
16दूधनाथ सिंह,आखिरी कलाम, पृ 176।
17 अलका सरावगी ,'कलिकथा वाया बाइपास' पृ 138।
18 वही ृ 197।
19 रवीन्द्र वर्मा, निन्यानवें,पृ 149।
20 नासिरा शर्मा,'ज़िन्दा मुहावरे' पृ 78।
21 रवीन्द्र वर्मा, 'दस बरस का भंवर'पृ 113।
22 स्वयं प्रकाश ,'ईंधन',पृ 163। 131
23 ममता कालिया, 'दौड़',पृ 22।
24 प्रियंवद,'परछाई नाच',पृ 102।
25 कमलेश्वर, 'कितने पाकिस्तान'पृ 46।
26 वही,पृ 58।
27 रवीन्द्र वर्मा,'दस बरस का भंवर' पृ 75।
28 रवीन्द्र वर्मा, 'मैं झांसी नहीं दूंगा',पृ 154।

Net sources

1.www.hindisamay .com /Wroter / काशीनाथ–flag.csp.
2.timesofindia . indiatimes .com /topic/ Hindia-literary-critic -Doodh-Nath-Singh.
3.Kitne-pakistan-by-kamleshwar.htmsahitya-akademi.gov.in >Home>Literaray Activities.
4.www.hindisamay.com /Writer/नासिर–शर्मा.csp.
5.www.kalpana.it/eng/Writer/indian-Writers/alka-saraogi.htm.
6.http://in.linkedin.com/in/ravindervarma.
7.https://hi.wikipedia.org/wiki/स्वयं प्रकाश.
8.www.shabdankan.com/.../priyamvad-no-Renaissance
9.hindisamay.com/upanayas/daud.htm.
10.www.friendsofbooks.com/../dus-baras-bahanawar-hindi-book-110390.ht.T

किरण ग्रोवर
एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org